भारतीय ज्ञान परंपरा

संस्कृति, दर्शन, शैक्षिक विचारधाराएँ और नवाचार

सम्पादक :
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय ज्ञान परंपरा :

संस्कृति, दर्शन, शिक्षा विचारधाराएँ और नवाचार

सम्पादक :

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,

अजमेर

छवि पब्लिकेशन्स

अजमेर-305001

प्रकाशक :
छवि पब्लिकेशन्स
अजमेर-305001
मो. 9660111549

संस्करण :
प्रथम 2022-2023

ISBN : 978 - 81 - 89435 - 64 - 6

मूल्य - 300/-

रचना - भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

मुद्रक - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

25. उपनिषद : भारतीय ज्ञान परम्परा के स्रोत

पिंकी सांखला
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

भारतीय संस्कृति का आधार वेद हैं, और वेदों का हृदय उपनिषद माने गए हैं। 'उपनिषद्' शब्द का अर्थ है — 'निकट बैठकर ज्ञान प्राप्त करना'। यह वह ज्ञान है जो गुरु से शिष्य को गूढ़ रूप में प्रदान किया जाता है। उपनिषद न केवल वेदांत का दर्शन प्रस्तुत करते हैं, बल्कि वे भारतीय ज्ञान परंपरा का प्राण हैं।

इनमें ब्रह्म, आत्मा, जगत, जीवन, मृत्यु, कर्म और मोक्ष जैसे अत्यंत गूढ़ दार्शनिक प्रश्नों पर विचार हुआ है। उपनिषद केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि दार्शनिक, नैतिक और वैज्ञानिक दृष्टि से परिपूर्ण ग्रंथ हैं।

उपनिषद शब्द 'उप' (निकट), 'नि' (नीचे), और 'षद्' (बैठना अथवा नष्ट करना) इन तीन धातुओं से बना है। इसका अर्थ हुआ — गुरु के निकट बैठकर वह ज्ञान प्राप्त करना जो अज्ञान का नाश करे।

आचार्य शंकर के अनुसार — 'उपनिषद् नाम ब्रह्मविद्या, या विद्या मोक्षसाधनं भवति।' अर्थात उपनिषद वह विद्या है जो मनुष्य को मुक्ति का साधन प्रदान करती है।

इस प्रकार उपनिषद केवल ग्रंथ नहीं, बल्कि एक जीवंत अनुभवपरक ज्ञान परंपरा हैं, जो मनुष्य को आत्मा के सत्य तक पहुँचने का मार्ग दिखाती हैं।

चारों वेदों के अंत में जो ग्रंथ हैं — वे आरण्यक और उपनिषद कहलाते हैं। इसीलिए उपनिषदों को वेदांत कहा गया है, अर्थात् वेद का अंतिम भाग।

वेदांत का तात्पर्य केवल क्रम में अंतिम होना नहीं, बल्कि ज्ञान की परिपूर्णता का प्रतीक होना है। वेदों में कुल 108 उपनिषदों का उल्लेख मिलता है, जिनमें प्रमुख हैं — ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य और बृहदारण्यक। ये उपनिषद ही आगे चलकर भारतीय दर्शन के छह प्रमुख दर्शनों (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत) का आधार बने।

उपनिषदों का प्रमुख विषय है — ब्रह्म और आत्मा का ज्ञान। इनका उद्देश्य यह बताना है कि सम्पूर्ण जगत एक ही परमसत्य ब्रह्म से उत्पन्न हुआ है और आत्मा उसी ब्रह्म का अंश है।

उपनिषद कहते हैं — 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म। तत्त्वमसि। अहं ब्रह्मास्मि।' इन तीन महावाक्यों में समस्त भारतीय दर्शन का सार निहित है। उपनिषद सिखाते हैं कि बाह्य जगत से ऊपर उठकर जब मनुष्य आत्मा का साक्षात्कार करता है, तभी उसे परमसत्य की प्राप्ति होती है।

ज्ञान का स्वरूप

उपनिषदों में ज्ञान को 'विद्या' कहा गया है, जो दो प्रकार की होती है —

(1) अपरा विद्या — यह लौकिक, व्यवहारिक, विषयगत ज्ञान है (वेद, व्याकरण, गणित आदि)।

(2) परा विद्या — यह आत्मा और ब्रह्म के ज्ञान से संबंधित है, जिससे मोक्ष प्राप्त होता है।

मुण्डक उपनिषद में कहा गया है — 'द्वे विद्ये वेदितव्ये — परा चापरा च।'

यह विभाजन भारतीय शिक्षा-दर्शन का मूल आधार बन गया। विद्यालयी शिक्षा जहाँ अपरा विद्या प्रदान करती है, वहीं गुरु-शिष्य परंपरा परा विद्या का माध्यम रही।

उपनिषदों में शिक्षा अथवा ज्ञान का उद्देश्य था — सत्य का अनुसंधान, आत्म-शुद्धि, संयम, सदाचार, और मोक्ष की प्राप्ति।

तैत्तिरीय उपनिषद में शिक्षक द्वारा स्नातक शिष्य को दी गई शिक्षा अमर है —

'सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः।'

'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव।'

यह शिक्षा भारतीय नैतिक जीवन का आधार बन गई।

गुरु-शिष्य परंपरा

उपनिषदों में ज्ञान प्राप्ति का सबसे प्रमुख माध्यम है गुरु-शिष्य संवाद। गुरु केवल शिक्षक नहीं, बल्कि आत्मा के साक्षात्कार का मार्गदर्शक होता है। छान्दोग्य उपनिषद में श्वेतकेतु और उनके पिता उद्दालक का संवाद, कठोपनिषद में नचिकेता और यमराज का संवाद, प्रश्नोपनिषद में ऋषि पिप्पलाद और शिष्यों के प्रश्न — यह सभी भारतीय शिक्षा परंपरा के आदर्श उदाहरण हैं।

इन संवादों से ज्ञात होता है कि शिक्षा केवल स्मृति या ग्रंथाध्ययन नहीं, बल्कि जीवनानुभव और आत्मबोध का माध्यम थी।

उपनिषदों का दार्शनिक दृष्टिकोण

उपनिषदों ने जगत को एकात्मक और अद्वैत रूप में देखा। ब्रह्म और आत्मा में कोई भेद नहीं है — यह विचार भारतीय अद्वैत दर्शन की नींव बना। शंकराचार्य ने इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए कहा — 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः।'

वेदों में जहाँ यज्ञ, मंत्र और कर्मकांड प्रमुख थे, वहीं उपनिषदों में ऋषियों ने उन कर्मों के पीछे छिपे तत्त्व और दर्शन को समझने का प्रयास किया। उपनिषदों ने यह उद्घोष किया कि समस्त सृष्टि का मूल एक ही है — ब्रह्म। वही ब्रह्म सभी प्राणियों में आत्मा के रूप में विद्यमान है।

उपनिषदों में केवल दार्शनिक विचार ही नहीं, बल्कि आचार, साधना, योग, ध्यान और नैतिक जीवन के आदर्श भी मिलते हैं। उनका उद्देश्य था — 'तमसो मा ज्योतिर्गमय।' अर्थात् अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाना।

आत्मा का स्वरूप

उपनिषदों में आत्मा को नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त कहा गया है। कठोपनिषद में नचिकेता और यमराज के संवाद में यमराज कहते हैं — न जायते म्रियते वा कदाचित्। आत्मा न तो जन्म लेती है, न मरती है।

बृहदारण्यक उपनिषद में आत्मा को इस प्रकार वर्णित किया गया है —

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यः मन्तव्यः निदिध्यासितव्यः। अर्थात आत्मा का साक्षात्कार दर्शन, श्रवण, मनन और ध्यान द्वारा किया जा सकता है।

आत्मा के इसी शाश्वत स्वरूप के ज्ञान से मनुष्य अपने वास्तविक अस्तित्व को पहचानता है और मोक्ष प्राप्त करता है।

ब्रह्म और आत्मा का संबंध

उपनिषदों का सबसे महान योगदान यह है कि उन्होंने आत्मा और ब्रह्म की एकता का सिद्धांत दिया। छान्दोग्य उपनिषद का प्रसिद्ध महावाक्य है — 'तत्त्वमसि — तू वही है।' अर्थात् जो ब्रह्म इस जगत में है, वही तेरे भीतर आत्मा के रूप में विद्यमान है।

ऐतरेय उपनिषद में कहा गया — 'प्रज्ञानं ब्रह्म।' अर्थात् चेतना ही ब्रह्म है।

इन चार महावाक्यों — 'अहं ब्रह्मास्मि, तत्त्वमसि, प्रज्ञानं ब्रह्म, अयमात्मा ब्रह्म' में संपूर्ण वेदांत और भारतीय दर्शन का सार समाहित है।

नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य

उपनिषदों ने यह स्पष्ट किया कि सच्चा ज्ञान तभी सार्थक है जब वह नैतिकता और आचरण से जुड़ा हो। ज्ञान यदि केवल बौद्धिक रह जाए और आचरण में न उतरे, तो वह अपूर्ण है। उपनिषद मानव जीवन के चार मूल उद्देश्यों — धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में संतुलन स्थापित करते हैं। वे सिखाते हैं कि ज्ञान का उद्देश्य केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि नैतिक और आत्मिक शुद्धि है।

मुण्डक उपनिषद कहता है —

'नायमात्मा प्रवचननेन लभ्यो, न मेधया न बहुना श्रुतेन।'

'यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः।'

अर्थात आत्मा केवल विद्वता या तर्क से नहीं, बल्कि साधना, श्रद्धा और आत्मनिष्ठा से प्राप्त होती है।

छान्दोग्य उपनिषद में कहा गया — 'आचार्यवान् पुरुषो वेद।' अर्थात् जो सदाचारवान है, वही सच्चा ज्ञानी है।

इस प्रकार उपनिषदों ने नैतिकता और आध्यात्मिकता को एकाकार किया। उन्होंने जीवन में सत्य, अहिंसा, करुणा, संयम, और आत्मसंयम को सर्वोच्च मूल्य बताया।

समाज और शिक्षा पर प्रभाव

उपनिषदों ने भारत की शिक्षा, संस्कृति और समाज को गहराई से प्रभावित किया। गुरुकुल व्यवस्था, आश्रम प्रणाली और वर्ण धर्म की नैतिकता — सभी उपनिषदों के सिद्धांतों पर आधारित थे। छात्र को ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए सत्य, अहिंसा, संयम, और श्रद्धा का अभ्यास करना आवश्यक था। तैत्तिरीय उपनिषद में शिक्षक द्वारा स्नातक शिष्य को दी गई शिक्षा प्रसिद्ध है —

'सत्यं वद, धर्मं चर, मातृदेवो भव, पितृदेवो भव।' यह उपदेश भारतीय नैतिक शिक्षा का सार है।

उपनिषद और विज्ञान का संबंध

उपनिषदों में प्रकृति और ब्रह्मांड के रहस्यों को जानने का भी प्रयास किया गया। उनमें आधुनिक विज्ञान की कई अवधारणाएँ प्रारंभिक रूप में दिखाई देती हैं —

* सृष्टि का कारण ऊर्जा (ब्रह्म)
* परमाणु की एकता की भावना
* जीवन के मूल में चेतना का सिद्धांत

ऐतरेय उपनिषद में मानव उत्पत्ति का विश्लेषण किया गया है, जो आधुनिक जीवविज्ञान से मिलता-जुलता है। माण्डूक्य उपनिषद में चेतना की चार अवस्थाओं का विश्लेषण, आधुनिक मनोविज्ञान की नींव माना जा सकता है।

समाज और संस्कृति पर उपनिषदों का प्रभाव

उपनिषदों ने समाज को एक उच्च नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रदान किया। उन्होंने यह सिखाया कि सभी प्राणी एक ही परमात्मा के अंश हैं, इसलिए किसी के प्रति घृणा नहीं करनी चाहिए। इस विचार ने अहिंसा और सर्वधर्मसमभाव की भावना को जन्म दिया। महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अरविन्द घोष जैसे विचारकों ने उपनिषदों से प्रेरणा ली। उनके लिए उपनिषद केवल ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन का दर्शन थे।

भारतीय ज्ञान परंपरा में उपनिषदों का स्थान

उपनिषद केवल दार्शनिक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारत की समूची ज्ञान परंपरा का स्रोत हैं। वेदों से लेकर आधुनिक युग के वैज्ञानिक चिंतन तक, सभी पर इनका प्रभाव देखा जा सकता है। उपनिषदों से ही गीता, ब्रह्मसूत्र, योगशास्त्र, और बौद्ध-जैन दर्शन की जड़ें जुड़ी हैं।

महात्मा गांधी ने कहा था — 'मुझे जो आत्मशक्ति मिली, वह उपनिषदों से मिली।' इस प्रकार उपनिषद भारत की आत्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं जहाँ ज्ञान, भक्ति और कर्म एकाकार हैं।

आज का युग भौतिकता और प्रतिस्पर्धा का युग है, जहाँ मनुष्य बाह्य सुख में शांति ढूँढ रहा है। उपनिषद बताते हैं कि सच्ची शांति भीतर है।

उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं —

* वे आत्मज्ञान, संतुलन और करुणा का संदेश देते हैं।
* वे विज्ञान और अध्यात्म के बीच पुल का कार्य करते हैं।
* वे मानवता, पर्यावरण और नैतिक जीवन के आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

उपनिषद हमें सिखाते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि स्व-बोध और आत्मोन्नति है।

निष्कर्षत: उपनिषदों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को दिशा, गहराई और दार्शनिक ऊँचाई प्रदान की। उन्होंने मानव जीवन को धर्म, ज्ञान और मुक्ति की ओर अग्रसर किया। उनकी शिक्षाएँ आज भी मानवता के लिए प्रकाशस्तंभ हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ें उपनिषदों में हैं। वेदों से उत्पन्न यह ज्ञान श्रुति के रूप में आगे बढ़ा, और स्मृतियों, दर्शनशास्त्रों, गीता, तथा आधुनिक भारतीय विचारधारा तक पहुँचा। उपनिषदों ने भारतीय शिक्षा, धर्म, दर्शन, समाजशास्त्र और राजनीति — सभी क्षेत्रों में गहरी छाप छोड़ी। उनका प्रभाव न केवल हिन्दू दर्शन पर, बल्कि बौद्ध, जैन, सूफी और ईसाई चिंतन पर भी पड़ा।

आधुनिक संदर्भ में उपनिषदों की उपयोगिता

आधुनिक युग में उपनिषदों की शिक्षा पहले से अधिक प्रासंगिक है। आज जब भौतिक प्रगति के बावजूद मनुष्य असंतोष और अशांति से घिरा है, तब उपनिषद उसे आंतरिक शांति का मार्ग दिखाते हैं। वे सिखाते हैं कि सच्चा सुख आत्मा के भीतर है, न कि बाहरी भोगों में। उनकी यह वाणी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है — 'तमसो मा ज्योतिर्गमय, असतो मा सद्गमय, मृत्युर्मा अमृतं गमय।'

निष्कर्षत: कह सकते हैं कि उपनिषद भारतीय ज्ञान परंपरा की आध्यात्मिक धरोहर हैं। उन्होंने ब्रह्माण्ड, आत्मा और जीवन के रहस्यों को उजागर कर मनुष्य को

अपने वास्तविक स्वरूप से परिचित कराया। उनकी शिक्षाएँ केवल प्राचीन भारत की नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता की साझा निधि हैं। आज भी यदि मानव जाति उपनिषदों की शिक्षाओं को अपनाए — सत्य, अहिंसा, संयम, आत्मानुशासन और ज्ञान के मार्ग पर चले तो विश्व में शांति, संतुलन और मानवीयता का नया युग आरंभ हो सकता है।

'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' - जहाँ सारा विश्व एक परिवार बन जाए यही उपनिषदों का अंतिम संदेश है।

❑❑❑